ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-11* February-2021
Anthology : The Research

दलित साहित्य में सौन्दर्य

Beauty In Dalit Literature

Paper Submission: 15/02/2021, Date ofAcceptance: 25/02/2021, Date of Publication: 26/02/2021

मन्नूराम मीना
सहायक आचार्य,
हिंदी विभाग,
राजकीय महिला महाविद्यालय
दौसा, राजस्थान, भारत

सारांश

दलित शब्द संस्कृत के धातु दल से बना है जिसका अर्थ है तोड़ना, कुचलना। संस्कृत भाषा शब्दकोशों में दलित शब्द के विभिन्न अर्थ बताएं हैं जिनमें दलित, दला गया, मर्दित पीसा गया आदि। हिंदी –अंग्रेजी शब्दों की चर्चा की जाए तो डिप्रेस्ड व ड्रराउनट्रोडेन शब्द दलित के लिए प्रयोग में लिए है। हिंदी शब्दकोशों में भी मसला हुआ, रौंदा हुआ, खंडित, विनिष्ट किया हुआ जैसे शब्द दलित शब्द के अर्थ के रूप में प्रयोग किया गया है। दलित साहित्य वह साहित्य है जो दलित जीवन और उसकी समस्याओं पर लिखा हुआ है। दलितों को हिंदू समाज व्यवस्थाकारों द्वारा सबसे नीचे पायदान पर रखे जाने के कारण उन्हें हेय, अछूत मानते हुए न्याय, शिक्षा, समानता तथा स्वतंत्रता आदि मौलिक अधिकारों से भी वंचित रखा गया। प्रारंभ की दृष्टि से देखा जाए तो दलित साहित्य की शुरुआत मराठी से माना जाता है जहाँ दलित पैंथर आंदोलन के दौरान बड़ी संख्या में दलित जातियों से आए रचनाकारों ने आम जनता तक अपनी भावनाओं, पीड़ा, दुख–दर्द को लेखों, कविताओं, निबंधों जीवनी एवं व्यंगो, कथा आदि के माध्यम से पहुंचाया। दलित साहित्य अपना केंद्र बिंदु मनुष्य को मानता है, दलित वेदना, दलित साहित्य की जन्म दात्री है वास्तव में यह समाज की वेदना है। दलित साहित्य के भीतर सहानुभूति की जगह स्वानुभूति, शिल्प और कला की जगह अंतर्वस्तु की प्राथमिकता, मनोरंजन या आनंद की जगह संघर्ष और पीड़ा का घोष उसे एक क्रांतिकारी स्वर प्रदान करता है। साहित्य के बने बनाए ढांचे में दलित साहित्य को जगह मिलनी संभव नहीं थी उसे अपनी जमीन खुद ही तैयार करनी थी अतः उसे अन्य से अलग होना नहीं था दिखाना भी था। इसलिए उसका आरंभिक स्वर बहुत ही ज्यादा आक्रमक दिखाई पड़ता है। आज स्थिति बदल चुकी हैं दलित साहित्य मजबूत परिवर्तनकारी धारा के रूप में अपनी अलग पहचान स्थापित कर चुका है। इस समय वह बेहतर व्याख्या–विश्लेषण व आत्मलोचन की स्थिति में है। दलित साहित्य का सौंदर्य परंपरागत साहित्य के सौंदर्य से पूर्णरूपेण भिन्न है। दलित साहित्य बौद्धिक विलासया मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि सामाजिक परिवर्तन की एक मुहिम है, दलितों को उनकी अस्मिता की पहचान कराने का माध्यम है। दलित साहित्य का मूल उद्देश्य उस समाज को जागृत करना और उसे खड़ा होने के लिए प्रेरित करना है, जो आज अशिक्षित और अर्द्धशिक्षित या नवसाक्षर है। इसलिए दलित साहित्यकार ऐसी भाषा, बिंब, मुहावरों और विचारों का प्रयोग अपने साहित्य में करता है जो एक क्लिष्ट न हो सुग्राह यहो , जिनमें भटकाव या उलझन न हो, सरल व स्पष्टता हो। यह साहित्य मानवीय समस्याओं और संवेदना को महत्व प्रदान करता है इसमें कोरी कलात्मकता व अलंकार की अपेक्षा कथ्य को प्रमुखता दी गई है।

The word Dalit is derived from the Sanskrit dal, which means to break, crush. In Sanskrit language dictionaries, various meanings of the word dalit are given, including dalit, dalaya, mardit, pisa etc. If the Hindi-English words are discussed, the words Depressed and DrawnTroden are used for Dalits. In Hindi dictionaries, words like mashed, trashed, fragmented, annihilated have been used as the meaning of the term Dalit. Dalit literature is the literature written on Dalit life and its problems. Dalits were also deprived of fundamental rights like justice, education, equality and freedom, considering them as untouchables, being placed at the bottom of the list by Hindu social order. Initially, the beginning of Dalit literature is considered to be from Marathi, where during the Dalit Panther movement a large number of creators from the Dalit castes have sent their feelings, anguish, sorrow and pain to the general public in articles, poems, essays, biographies and Delivered through satires, stories etc. Dalit literature considers man as its focal point, Dalit pain is the birth anniversary of Dalit literature, in fact it is the anguish of society. Within Dalit literature, instead of sympathy, self-realization, preference for content over craft and art, conflict and suffering over entertainment or enjoyment give it a revolutionary tone. Dalit literature was not possible to get a place in the structure made of literature, he had to prepare his own land, so he did not have to be separated from others. Therefore, his initial voice seems very aggressive. Today, the situation has changed, Dalit literature has established its separate identity as a strong transformational stream. At this time he is in a state of better interpretation-analysis and introspection. The beauty of Dalit literature is completely different from the beauty of traditional literature. Dalit literature is not a means of intellectual luxury or entertainment but a campaign for social change, a means of identifying Dalits with their identities. The basic purpose of Dalit literature is to awaken and motivate the society which is illiterate and semi-literate or newly educated today. That is why the Dalit litterateur uses such language, images, idioms and ideas in his literature which is not a well-known sugraha, which does not get distracted or confused, is simple and clear. This literature gives importance to human problems and sensitization, giving more importance to the story than to the blank artistry and ornamentation.

मुख्य शब्दः दलित, सहानुभूति, स्वानुभूति, सौन्दर्य, परम्परागत, वांग्मय, शोषित, यथार्थवादी, अस्मिता।

Dalit, Sympathy, Self-Realization, Beauty, Traditional, Wangmay, Exploited, Realistic, Identity.

प्रस्तावना

दलित साहित्य में सौंदर्य को समझने के से पहले दलित का अर्थ व दलित साहित्य को समझा जाए तो अनुचित नहीं होगा। दलित शब्द की उत्पत्ति पर विचार किया जाए तो यह कह सकते हैं कि संस्कृत के धातु दल से दलित शब्द की व्युत्पत्ति हुई है जिसका अर्थ है तोड़ना, कुचलना है। संस्कृत भाषा शब्दकोशों में दलित शब्द के विभिन्न अर्थ बताएं हैं– दलित, दला गया, मर्दित, पीसा गया। अगर हिंदी–अंग्रेजी शब्दों की चर्चा की जाए तो डिप्रेस्डवड्राउनट्रोडेन शब्द दलित के लिए प्रयोग में लिए हैं। हिंदी शब्दकोशों में भी मसला हुआ, रौंदा हुआ, खंडित, विनिष्ट किया हुआ जैसे शब्द दलित शब्द के अर्थ के रूप में प्रयुक्त किए गए हैं।

दलित शब्द के अर्थोपरांत हम दलित साहित्य पर विचार करते हैं – दलित साहित्य वह साहित्य है जो दलित जीवन और उसकी समस्याओं पर लिखा हुआ है। दलितों को हिंदू समाज व्यवस्थाकारों द्वारा सबसे नीचे पायदान पर रखे जाने के कारण उन्हें हेय, अछूत मानते हुए न्याय, शिक्षा, समानता तथा स्वतंत्रता आदि मौलिक अधिकारों से भी वंचित रखा गया। प्रारंभ की दृष्टि से देखा जाए तो दलित साहित्य की शुरुआत मराठी से माना जाता है जहां दलित पैंथर आंदोलन के दौरान बड़ी संख्या में दलित जातियों से आए रचनाकारों ने आम जनता तक अपनी भावनाओं, पीड़ा, दुख – दर्द को लेखो, कविताओं, निबंधों, जीवनीयों, कटाक्षों व्यंगों, कथा आदि के माध्यम से पहुंचाया।' दलित साहित्य अपना केंद्र बिंदु मनुष्य को मानता है, दलित वेदना, दलित साहित्य की जन्मदात्री है वास्तव में यह समाज की वेदना है।[1]

भारत एक विकासशील देश है, यहां की आधी से ज्यादा आबादी आर्थिक दृष्टि से दलित ही है। दलित साहित्य की अवधारणा अनेकानेक बहसों से गुजरती हुई आगे बढ़ी है। सवाल उठे कि दलित साहित्य कौन लिख सकता है, यानी स्वानुभूति ही प्रमाणिक होगी या सहानुभूति को स्थान मिलेगा, प्रमुख साहित्यकारों ने कहा चूंकि सवर्णों ने दलितों की पीड़ा को भोगा नहीं इसलिए वे दलित साहित्य लिखने के अधिकारी नहीं हो सकते है। दलित के साथ साहित्य का प्रयोग 1958 से प्रारंभ हो गया और इसी के साथ दलित साहित्य को आंदोलन का रूप प्राप्त हो गया। सवर्ण जातिवादी समाज के लिए यह कल्पनातीत बात थी कि यह समुदाय एक दिन इस तरह खड़ा होगा और अपना साहित्य रचा जाएगा। सवर्ण समाज की इस विकृत सोच के कारण ही दलित को लंबे समय तक साहित्य के रूप में मान्यता नहीं मिलने दी। परंतु बुलंद इरादों के साथ साहित्य के मैदान में उतर दलित दलित साहित्यकारों ने बिना परवाह किए क्षेत्रीय स्तर से प्रांतीय व प्रांतीय स्तर से भारतीय स्तर पर जगह बनाई। अब स्थिति दूसरी है। दलित साहित्य आज भारतीय साहित्य का मुख्य स्वर है। भारतीय साहित्य की समृद्धि में उसका योगदान ऐतिहासिक होने के साथ–साथ भारतीयता की अवधारणा को समृद्ध करने में भी महत्वपूर्ण स्थान है। इतना सब कुछ होने के उपरांत भी दलित साहित्य अनेक आरोप–प्रत्यारोप से घिरा है, अगर यह कहा जाए कि असल संदर्भ ध्यान जाने से रोकने का ही आजमाया हुआ नुस्खा है। जाति–संरचना को बनाए रखने वालों का हित भी इसी में है। दलित साहित्य में तीन अनिवार्य संदर्भ है– हिंसा, राजनीति और शक्ति। इन्हीं तीन संदर्भों को दलित साहित्य में प्रकट किया है। साहित्यकारों, समाज सुधारकों जैसे फूले– अंबेडकर के प्रयासों से उम्मीद बंधी थी कि आजाद भारत में हिंसा से मुक्ति मिलेगी परंतु उम्मीद सिर्फ उम्मीद ही बनकर रह गई। स्वाधीनता के 70 वर्ष उपरांत भी दलित समाज को उसी हिंसा का सामना करना पड़ रहा है जो पहले करना पड़ता था। हिंसा के संदर्भ से दलित साहित्य भरा हुआ है, परंपरा–पोषित हिंसा को मदांध गज से उम्मीद करते हुए पहली पीढ़ी के हिंदी दलित कवि मलखान सिंह लिखते हैं–

'मदांध देहाती लदमद भाग रहा है
हमारे बदन
गांव की कंकरीली
गलियों में घसीटते हुए
लहूलुहान हो रहे हैं
हम रो रहे हैं
गिड़गिड़ा रहे हैं
जिंदा रहने की भी मांग रहे हैं
गांव तमाशा देख रहा है
और हाथी अपने खंबेजैसे पैरों से
हमारी पसलियां कुचल रहा है
मवेशियों को रौंद रहा है
झोपड़ियां जला रहा है।
गर्भवती स्त्रियों की नाभि पर
बंदूक दाग रहा है
और हमारे दूध मुझे बच्चों को
लाल लप–लप आती लपटों में
उछाल रहा है।'[2]

दलित साहित्य के भीतर सहानुभूति की जगह स्वानुभूति, शिल्प और कला की जगह अंतर्वस्तु की प्राथमिकता, मनोरंजन या आनंद की जगह संघर्ष और पीड़ा का घोष उसे एक क्रांतिकारी स्वर प्रदान करता है। साहित्य के बने बनाए ढांचे में दलित साहित्य को जगह मिलनी संभव नहीं थी उसे अपनी जमीन खुद ही तैयार करनी थी अतः उसे अन्य से अलग होना ही था दिखाना भी था। इसलिए उसका आरंभिक स्वर बहुत ही ज्यादा आक्रमक दिखाई पड़ता है। आज स्थिति बदल चुकी है, दलित साहित्य एक मजबूत परिवर्तनकारी धारा के रूप में अपनी अलग पहचान स्थापित कर चुका है। इस समय वह बेहतर व्याख्या –विश्लेषण व आत्मलोचन की स्थिति में है। वर्ग और वर्ण का द्वंद्व घुलकर जय भीम कामरेड तक पहुंच गया है। मुक्त चिंतन और अभिव्यक्ति से लेकर

खाने की आजादी की हत्या के इस दौर में दलित साहित्य चिंतन भी एक ऐतिहासिक मोड़ पर खड़ा है।

दलित साहित्य जन साहित्य है।इसे मास लिटरेचर कहा जा सकता है। सिर्फ इतना ही नहीं यह साहित्य लिट्रेचर आफ एक्शन भी है, जो मानवीय मूल्यों की भूमिका पर सामंती मानसिकता के विरुद्ध आक्रोश जनित संघर्ष और विद्रोह से उपजा है। उसका स्वतंत्र अस्तित्व सहज ही स्वीकार किया जाना चाहिए। उसके सामाजिक अस्तित्व की धारणा समता, स्वतंत्रता और विश्व बंधुत्व के प्रति निष्ठा निर्धारित होनी चाहिए। यही दलित साहित्य का आग्रह है। दलित साहित्य मूलतः प्रश्न सूचक है। दलित साहित्य में वर्णित वेदना 'मैं' की वेदना नहीं पूरे समाज की वेदना है।

दलित साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि का विवेचन करते समय उसके सृजनात्मक मूल्यों पर विचार किया जाए तो कहा जा सकता है कि यह साहित्य भारतीय साहित्य में प्रयुक्त सनातनी परंपराओं को अस्वीकार करता है आज भी रामायण, महाभारत भारतीय साहित्य के प्रेरणा स्रोत माने जाते हैं। मनुस्मृति और ऋग्वेद जैसे ग्रंथ परंपरावादी साहित्यकारों के मार्ग दीप हैं। दलित साहित्य इन सब को अस्वीकार करता है। वह भाग्य और भगवान को ही नहीं धर्मशास्त्रों को भी नकारता है। दलितों ने जो कुछ भोगा और सहा है, दलित साहित्य उसी असमानता व अन्याय और उत्पीड़न की शताब्दी अभिव्यक्ति है।

दलितों की प्रतिष्ठा, सम्मान और अस्मिता, शिक्षा, संघर्ष और संगठन आदि सभी मुद्दे मनुष्यता की जरूरीशर्त है। जिन्हें दलित साहित्य उठाता है।

दलित साहित्य में सौंदर्य

सौंदर्य शास्त्र संवेदनात्मक भावात्मक गुण–धर्म और मूल्यों का अध्ययन है। कला, संस्कृति और प्रकृति का प्रति अंकन ही सौंदर्यशास्त्र है। सौंदर्यशास्त्र वह शास्त्र है जिसमें कलात्मक कृतियां, रचनाओं आदि से अभिव्यक्त होने वाला अथवा उनमें निहित रहने वाले सौंदर्य का तात्विक, दार्शनिक और मार्मिक विवेचन होता है। सौंदर्यशास्त्र को विकास की दृष्टि से देखा जाए तो 19वी सदी को सौंदर्यशास्त्र की शताब्दी कहा जा सकता है। हीगेल ने अपनी रचना लेक्चर्सऑन एथलेटिक्स में, शॉपेनहॉर ने दि वर्ल्ड एज एंड रिप्रेजेंटेशन में, नीत्शेनेबर्थ ऑफ ट्रेजेडी में, पश्चिमी सौंदर्यशास्त्र के विभिन्न पहलुओं की बारीक व्याख्या की और उसके नए आयामों को प्रकाशित किया। बीसवीं सदी में सौंदर्य शास्त्र के बारे में अनेकानेक सवाल जवाबों का दौर चला और कुछ मार्कसवादी विद्वानों ने सौंदर्यशास्त्र की एक मार्कसवादी श्रेणी विकसित करने की कोशिश भी की है। हिंदी कवि गजानन माधव मुक्तिबोध ने नए साहित्य का सौंदर्यशास्त्र में– जनता का साहित्य किसे कहते हैं? शीर्षक आलेख में कहा है जनता का साहित्य का अर्थ जनता के लिए साहित्य से है।... ऐसा साहित्य जो जनता के जीवन –मूल्यों को जनता के जीवन आदर्शों को प्रतिष्ठित करता हो, उसे अपने मुक्ति पथ पर अग्रसर करता हो। सौंदर्यशास्त्र की विवेचना में सौंदर्य, कल्पना, बिम्ब और प्रतीकों को मुख्य माना है विद्वानों ने जबकि सौंदर्य के लिए सामाजिक यथार्थ एक विशेष घटक है। कल्पना और आदर्श की नींव पर खड़ा साहित्य किसी भी समाज के लिए प्रसांगिक नहीं हो सकता हैं। साहित्य के लिए वैचारिक प्रतिबद्धता और वर्तमान की दारुण विसंगतियां ही उसे प्रसांगिक बनती हैं।

दलित साहित्य का सौंदर्य परंपरागत साहित्य के सौंदर्य से पूर्ण रूपेण भिन्न है, दलित साहित्य बौद्धिक विलास या मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि सामाजिक परिवर्तन की एक मुहिम है, दलितों को उनकी अस्मिता की पहचान कराने का माध्यम है। दलित साहित्य का मूल उद्देश्य उस समाज को जागृत करना और उसे खड़ा होने के लिए प्रेरित करना है, जो आज अशिक्षित और अर्द्धशिक्षित या नवसाक्षर है इसलिए दलित साहित्यकार ऐसी भाषा, बिंब, मुहावरे और विचारों का प्रयोग अपने साहित्य में करता है जो क्लिष्ट नहो सुग्राहय हो, जिनमें भटकाव या उलझन न हो, सरल व स्पष्टता हो।

'हिंदू समाज के पारंपरिक मूल्यों एवं सनातनी विश्वासों के प्रति घृणा की हद तक आस्था ही वह केंद्रीय भाग है जो तमाम दलित साहित्यकारों को एक सूत्रता प्रदान करता है। उनका साहित्य जागृत दलितों द्वारा शेष दलितों को जागृत करने का साहित्य है। उनमें मानवाधिकार की सदियों पुरानी चाह कौंधती है। लिहाजा दलित साहित्य की संपूर्ति रचना के कथानक, पात्र, रस या शिल्प में नहीं है उसकी संपूर्ति है वर्ण व्यवस्थावाद एवं सनातन हिंदू वांग्मय के विरुद्ध दलित चेतना की जागृति में।'[3]

दलित साहित्य के सौंदर्य की समीक्षा कथ्य और कला पक्ष के आधार पर की जाए तो ज्ञात होता है कि यह साहित्य मानवीय समस्याओं और संवेदना को महत्व प्रदान करता है इसमें कोरी कलात्मकता व अलंकार की अपेक्षा कथ्य को प्रमुखता दी गई है।डॉ.सी.वी भारती ने दलित साहित्य के सौंदर्य के बारे में कहा है कि॰ दलित साहित्य का सौंदर्य यूनानी विचारक सुकरात के इन विचारों का अनुगामी है, 'गोबर से भरी टोकरी भी सुंदर बन जाती है यदि वह अपना कुछ उपयोग रखती है जबकि स्वर्ण ढाल भी असुंदर है यदि वह उपयोग की दृष्टि से अपूर्ण है।'[4] दलित साहित्य में सौंदर्य के निम्न बिंदुओं के आधार पर दिखा जा सकता है–

वंचितों, उपेक्षित व शोषित का वर्णन

दलित साहित्य वंचित, उपेक्षित ,शोषित को लेकर चला है वह लोकोपयोगी है। दलित साहित्य, समाज और राष्ट्र की एकता, अखंडता और दृढ़ता के लिए मानव हित की बात करता है। दलित साहित्य में वस्तुगत तथ्यों के उपयोग के बहाने साहित्यकार अपनी रचना के माध्यम से दलितों के अंदर प्रतिरोध की संस्कृति और संघर्ष की चेतना विकसित करना चाहते हैं। उदाहरण स्वरूप ओम प्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन' को लिया जा सकता है। जहां हेडमास्टर ओम प्रकाश को पढ़ाने के स्थान पर झाड़ू लगवाता है, लेकिन जब उसके पिता को यह बात पता चलती है तो उन्हें बहुत गुस्सा आता है वह चीखती हुई आवाज में कहते हैं 'कौन है द्रोणाचार्य की औलाद जो मेरे लड़के से झाड़ू लगवावे है। हेड मास्टर ने तेज आवाज में कहा था, 'ले जा इसे यहां से चुहड़ा होके पढ़ने चला है..... जा चला जा नहीं तो हाथ

–गोड़ करवा दूंगा'। पिताजी ने मेरा हाथ पकड़ा और लेकर घर की तरफ चल दिए जाते– जाते हेड मास्टर को सुना कर बोले 'मास्टर हो इसलिए जा रहा हो..... इतना याद रखें मास्टर .....जोचूहड़े का यहीं पढेगा..... इसी मदरसे मैं। और यूं ही नहीं इसके बाद और भी आवेंगे पढ़ने कू।'[5]

जीवन दर्शन

दलित साहित्य का यथार्थ अलग है इसमें एक नया संसार,नया मनुष्य को व्यक्त किया जिसकी भाषा अलग है। इस भाषा को गँवार, असभ्य भाषा कहा जा सकता है। जिसमें शिष्ट संकेत और व्याकरण के नियमों की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया गया है। आज भी यही यथार्थ है कि जब दलित युवक पढ़ लिख कर आगे बढ़ने की कोशिश करता है तो उसे अनेक अपमानजनक अवरोधों का सामना करना पड़ता है। दलितों को अस्पृश्य समझा जाता है। 'परंपरा' कविता में 'शरण कुमार लिंबाले' ने अस्पृश्यता और दरिद्रता को दृष्टिगत किया। वे धार्मिक ग्रंथों को कोसते हुए अपने पूर्वजों को संबोधित करते हुए कहते हैं –

'मेरे बाप दादाओं ने कैसा कैसे भरोसा किया
इन बचकानी पुराण पुराण पोथियोंपर
क्यों कभी नहीं की बगावत
इस हरामी परंपरा के खिलाफ
कूड़े से लिखे गए ही निरंकुश आदेश
हमारी पीठ पर गुलामी के
हमने कैसे सहा इन सबको
जान मुट्ठी में लेकर वन में भटकती बस्तियां
पसीने से तरबतर यह मैदान
आंसुओं से भर्राई है झाड़ी।'[6]

ऊंची वर्ण के छात्रों द्वारा किस प्रकार भेदभाव किया जाता है और उन्हें जातिसूचक अपमानजनक शब्दों से हतोत्साहित करने की कोशिश की जाती है। अगर दलित सरकारी नौकरी प्राप्त कर लेता है तो सवर्ण साथियों द्वारा सरकारी दामाद कहकर व्यंग्य बाणों से आधातित किया जाता है इसे ओमप्रकाश वाल्मीकि ने 'जूठन' व शरण कुमार लिंबाले ने 'सक्करमाशी' नामक आत्मकथा में दशा है।

वेदना

दलित साहित्य यथार्थवादी होने के कारण इसमें व्यक्ति और उनका जीवन प्रमुख है, बाकी कलाएं गौड हैं। परंपरागत साहित्य सौंदर्य को पंडित जगन्नाथ के 'वाक्यम रसात्मक काव्यम' सूत्र की दृष्टि से देखता है जबकि दलित लेखक इसे अधूरे व पूर्वग्रह से ग्रस्तमानते हैं। दलित लेखक जिस वर्ग से आ रहे हैं, उसी वर्ग की वेदना, आक्रोश, शोषण पीड़ा को जनसामान्य की भाषा –बोली में अपने वर्ग के उपमा, रूपक आदि को लेकर आ रहे हैं। वे परंपरागत सौंदर्य के अनुगामी नहीं है। श्याम बाबू शर्मा की नवीनतम पुस्तक 'दलित हिंदी कविता का वैचारिक पक्ष' में प्रारंभ से अंत तक अनेक कविताओं के उदाहरण सामने रखकर दलित वेदना को व्यक्त किया है। इन कविताओं में कांटे हैं जो कदम कदम पर चुभते हैं, गर्म हवा के थपेड़े हैं जो मर्म तक बेचौन कर देते हैं।भारत की विराट सामाजिक संरचना में दलित समुदाय कहां, कैसे, किन परिस्थितियों में जी रहे हैं, उसका बयान करती है। दया पवार की आत्मकथा 'अछूत' में दलित समुदाय की विवश नारकीय जीवन परिस्थितियां का चित्रण किया है। 'ठाकुर का कुआं 'कविता में दलितों की वेदनाव अंतः पीड़ा को सहज रूप से प्रकट कियागया है ––

चूल्हा मिट्टी का
मिट्टी तालाब की
तालाब ठाकुर का
भूख रोटी की
रोटी बाजरेकी
बाजरा खेत का
खेत ठाकुर का
बैल ठाकुर का
हल ठाकुर का
हल की मूठ पर हथेली अपनी
फसल ठाकुर की
कुआं ठाकुर का
पानी ठाकुर का
खेत खलियान ठाकुर के
गली मोहल्ले ठाकुर के
फिर अपना क्या?
गांव ?
शहर ?
देश ?' [7]

अस्मिता और प्रतिरोध

दलित कवि के मूल में मनुष्य होता है, तो वह उत्पीड़न और असमानता के प्रति अपना विरोध दर्ज करेगा ही। जिसमें आक्रोश आना स्वाभाविक परिणति है।जो दलित कवि कीअभिव्यक्ति को यथार्थ के निकट ले जाती है। उसके अपने अंतर्विरोध भी हैं, जो कविता में छिपते नहीं हैं, बल्कि स्वाभाविक रूप से अभिव्यक्त होते हैं। दलित कविता का जो प्रभाव और उसकी उत्पत्ति है, जो आज भी जीवन पर लगातार आक्रमण कर रही है। इसलिए कहा जाता है कि दलित कविता मानवीय मूल्यों और मनुष्य की अस्मिता के साथ खड़ी है। दलित कविता निजता से ज्यादा सामाजिकता को महत्व देती है। इसलिए दलित कविता का समूचा संघर्ष सामाजिकता के लिए है। दलित कविता सामाजिक यथार्थ, जीवन संघर्ष और उसकी चेतना की आंच पर तपकर पारंपरिक मान्यताओं के विरुद्ध विद्रोह और नकार के रूप में अभिव्यक्त होता है। यही उसका केंद्रीय भावभी है, जो आक्रोश के रूप में दिखाई देता है। 'जाति' पर आधारित भारतीय समाज –व्यवस्था दलितों के अस्तित्व को न के बराबर मानती हैं और मनुष्य के रूप में उसकी अस्मिता को नकारी है। अतः दलित–साहित्य दलित अस्तित्व अस्मिता की खोज करता है। बाल्मीकि जी की कविताओं में दलित अस्तित्व और अस्मिता की तलाश दिखाई पड़ती है। स्वर्ण समाज ने दलितों की अस्मिता को क्षीण करने में कोई कसर नहीं छोड़ी हैं। इसलिए बाल्मीकि जी आक्रोश के साथ कहते हैं ––

'यदि तुम्हें
अपने ही देश में नकार दिया जाए
मानकर बंधुआ

छीन लिए जाए अधिकार सभी
जला दी जाए समुची सभ्यता तुम्हारी
नोच–नोच कर फेंक दिए जाये
गौरवमय इतिहास के पृष्ठ तुम्हारे।।
तब तुम क्या करोगे ?'8

जाति व्यवस्था का खंडन

वर्ण– व्यवस्था में ऊंची जाति के लोगों को मनुष्य के रूप में जीने के सारे अधिकार दिए और दलितों के सारे अधिकार छीन लिए तथा उन्हें सवर्णों के दास बना दिए। दलित वर्ग इस दासत्व से मुक्त नहो सके और विद्रोह न कर सके, इस हेतु वर्ण व्यवस्था में ऐसे कड़े नियम प्रस्तुत किए कि दलित वर्ग हमेशा के लिए अपाहिज हो गया। वर्ण–व्यवस्था को इसी अमानीयता को कवि ने 'कुदाल' कविता की इन पंक्तियों में व्यक्त किया है––

'पृथ्वी की समूची ऊर्जा
रक्त शिराओं में समेट कर भी
मैं अपाहिज था
क्योंकि,
जो कुदाल हमने दी थी
मेरे हाथ में
वह मिट्टी को सोना तो
बना सकती थी
किंतु
कुछ नहीं कर सकती थी
तुम्हारे विरुद्ध '[9]

जाति– व्यवस्था में सदियों से दलितों को बांध रखा है। उनकी प्रगति को अवरुद्ध किया है। जाति–व्यवस्था से मिलने वाले दाहको शब्दों में व्यक्त करते हुए बाल्मीकि जी 'ज्वालामुखी' कविता में कहते हैं'

सदियों से पीड़ित
दलित
मेरा हृदय बन गया है
ज्वालामुखी
फट पड़ने को लालायित
भीतर ही भीतर
मुझे हिला रहा है
बाहें फड़कती हैं
जिहवा मचलती है
प्रगति अवरुद्ध
जाति व्यवस्था के बंधन में' [10]

हिंदू धर्म, धर्मशास्त्र एवं संस्कृति का विखंडन

हिंदू धर्म, धर्म शास्त्र एवं संस्कृति में छिपे एवंअमानवीय तथ्योका विखंडनात्मक ढंग से चित्रण करना दलित विमर्श की एक प्रमुख विशेषता रही है। ब्राह्मणों द्वारा स्थापित हिंदू धर्म वर्णवादी एवं जातिवादी रहा है। अतः दलितों के साथ ही धर्म में सदा से अन्याय किया है। हिंदू धर्म में स्थापित मान्यताएं दलितों को हीन मानती हैं। उनके अनुसार दलित दलित वर्ग में जन्म लेना , उसके पूर्व जन्मों के बुरे कर्मों का फल है। अतः उसके अनुसार दलितों को चाहिए कि वे सवर्णों द्वारा दी जाने वाली है प्रताडनाओं को सहे और उनकी सेवा करें।' अस्थि –विसर्जन कविता में बाल्मीकि जी हिंदू धर्म में व्याप्त पाखंड का पर्दाफाश करते हैं। अस्थि – विसर्जन कर्मकांड के माध्यम से ढोंगी ब्राह्मण वर्ग लोगों से धन ऐठता है। ब्राह्मण वर्ग की धन हड़पने की इस वृत्ति का चित्रण उभरते हुए कवि कहते हैं–

इसलिए तय कर लिया मैंने
नहीं नहाऊंगा
ऐसी किसी गंगा में जहां पांडे की गिद्ध नजरे
गड़ी हो
अस्तियों के बीच रखें सिक्कों
और दक्षिणा के रुपयोंपर
विसर्जन से पहले ही
झपट्टा मारने के लिए ब्याज की तरह'[11]

हिंदू धर्मशास्त्र के प्रति दलित अपना विरोध प्रकट करते हैं क्योंकि धर्मशास्त्र दलितों की प्रगति में अवरोध बनकर खड़े हैं। ब्राह्मण वर्ग ने ईश्वरादि ढकोसलों का सहारा लेकर हिंदू धर्मशास्त्रों में दलितों विरोधी, जातिवादी एवं वर्ण वादी नियम प्रस्तुत किए हैं। 'काले दिनों' कविता में धर्मशास्त्रों के प्रति विरोध किया गया है–

'मेरी आंखों में बसी दहशत
घृणा में बदल रही है
उन धर्मों ग्रंथों के विरुद्ध
जो रास्ते में खड़े हैं कटीले झाड़–
झंखाड़ की तरह
अवरोध बंद कर'[12]

ब्रह्मणवादी मानसिकता के धनी सवर्णों ने हिंदू संस्कृति का भारतीय संस्कृति के नाम पर अधिक महिमामंडन किया है। हिंदू संस्कृति को जिन मूल्यों के आधार पर प्रतिष्ठित किया गया है, वे मूल्य मानवता के स्तर पर उदात्त नहीं रहते हैं। हिंदू संस्कृति ने मनुष्य – मनुष्य के बीच असमानता की दीवार खड़ी कर दी हैं। अतः बाल्मीकि जी ने काव्य में हिंदू संस्कृति में छिपेछदम का पर्दाफाश मिलता है। 'शायद आप जानते हो' कविता में कवि हिंदू संस्कृति का क्रूर और अमानवीय चित्र प्रस्तुत करते हैं–

'यज्ञों में पशुओं की बलि चढ़ाना
किस संस्कृति के प्रतीक हैं
मैं नहीं जानता
शायद आप जानत हो' 13

हिंदू संस्कृति सेवा, त्याग और बलिदान के नाम पर हजारों सालों से करोड़ों दलितों का शोषण किया है। इस संस्कृति को व्याख्यायित करने वाले सवर्णों द्वारा गढ़े गए शास्त्रों में दलितों को गुलाम बनाने के षडयंत्र एवं प्रपंच मौजूद हैं। यही घिनौना सत्य उतारते हुए वाल्मीकि जी 'वंशज' कविता में कहते हैं–

दीवार बनकर खड़े हैं दुख
चुभते हैं विषैले फूल की तरह
रिसता है लहू जल प्रताप सा
थकी–हारी देर से
नियति के बहाने
अच्छा प्रपंच रचा है तुमने
जख्मों से पटे चेहरे
अबपहचाने नहीं जाते

अरे
अब तो मान लो
कि सभ्यता के बाद हो तुम'[14]

न्याय की मांग

जाति व्यवस्था के कारण दलित जीवन की सामान्य चीजों से भी वंचित रह जाता है। पीने के पानी के लिए भी वह सदियों से तरसता आया हैं। हिंदूवादी अस्पृश्यता के चलते ऐसी दयनीय स्थिति उसके लिए निर्मित हुई है अन्याय–ग्रस्त वातावरण में जिंदगी व्यतीत करना उसके लिए सदा से दुख दुखद रहा है। दलितों ने जब भी न्याय की मांग की है तब अमानवीय सवर्णों ने उनकी हत्याएं की है और उत्पीड़न तथा अन्याय का वातावरण अधिक गहरा किया है। बाल्मीकि जी 'अपने हिस्से की रोटी' कविता में कहते हैं–

'मैंने मांगी
अपने हिस्से की रोटी
वेउठ खड़े हुए
हाथों में अंगारे लेकर
हवा में फैल गयी
चिरायधं
कोई देवता नहीं पसीजा
नहीं हुई आकाशवाणी
ईश्वर ने भी नहीं दिया अवतार
ओ हजारों साल पुराने देवताओं
मैं नकारता हूं
तुम्हारे अस्तित्व को
मैं लडूंगा
अपनी हड्डियों के वज्रसे
जिसकी मूठपर चिपकी है
निर्दोष बच्चों की सिसकियां
लूटी –पिटी स्त्रियों का प्रतिशोध'[15]

'खामोश आहटें' कविता में कवि कहते हैं–

कभी नहीं मांगी बलिश्त पर जगह
नहीं मांगा आधा राज भी
मांगा हैसिर्फ न्याय
जीने का हक
थोड़ा सा आकाश
थोड़ा सा पीने लायक पानी
थोड़ा सा सुख
थोड़ा सा चौन
थोड़ी सी धूप
थोड़ी सी हवा
थोड़ी सी रोशनी
थोड़ी सी किताबें
थोड़ा सा बचपन
थोड़ा सा अपनापन
जब जब भी कुछ मांगा
वेगोलबंद होकर टूट पड़े
मैं आवाक
चक्रव्यूह में फंसे अभिमन्यु की तरफ
देखता रह गया'[16]

दलित वर्ग जब भी मनुष्य के रूप में जीने का अधिकार मांगता है तब ब्राह्मणवादी सवर्णलोग उसे चारों ओर से घेर लेते हैं और गुलामी में जीने के लिए बाध्य करते हैं। 'शंबूक का कटा सिर' कविता में कवि ने विखंडनात्मक ढंग से दलितों के साथ हो रहे अन्याय को प्रस्तुत करते हुए जाहिर किया है कि इसी अन्याय के विरुद्ध लड़ते हुए दलित वर्ग एक दिन न्याय प्राप्त करेगा। कवि कहते हैं–

यहां गली–गली में
राम है
शंबूकहै
द्रोण है
एकलव्य है
फिर भी सब खामोश है
कहीं कुछ है
जो बंद कमरों से उठते क्रंदन को
बाहर नहीं आने देता
कर देता है
रक्त से सनी उंगलियों को महिमामंडित
शंबूकतुम्हारा रक्त जमीन के अंदर
समा गया हैजो किसी भी दिन
फुट कर बाहर आएगा
ज्वालामुखी बनकर'[17]

भाषा

दलित साहित्य की भाषा पर विचार किया जाए तो कहा जा सकता है कि दलित साहित्यकारों ने अपने वातावरण और परिस्थितियों के अनुकूल उपमानो से युक्त सरल साहित्य भाषा का प्रयोग किया है। दलित साहित्य में जैसे पात्र वैसी ही भाषा का प्रयोग करते हुए गंभीरता और मौलिकता को केंद्र में रखकर साहित्य सृजन किया गया है। दलित साहित्य की भाषा, वह भाषा है, जो खुद उनकी पीड़ा, अपमान और व्यथा तथा जनसामान्य की आशाओं आकांक्षाओं के यथार्थ को सही अभिव्यक्ति दे सके। जाति की कठोरता और सवर्णोके क्रूरतापूर्ण व्यवहार के बावजूद दलित कवि सी.बी. भारती उदार हृदय से समाज में सामंजस्य स्थापित करने की बात करते हैं –

'तुम तुम फैलाते रहे गंदगी
और मैं करता रहा सफाई
चलाता रहा अपनी झाडू
तुम फैलाते रहे घृणा
मारते रहे हमारा हक
और मैं बेबस बेजुबान
बांटता रहा प्यार सुख सब में
तुमने जब–जब फैलाई है दुर्गंध
तब–तब मैंने भी खेली है खुशबू'[18]

दलित साहित्यकार पात्रानुकूल गंभीर और मौलिकता को केंद्र में रखकर साहित्यसृजन किया है। आक्रोश, विद्रोह और स्किवशता के तेवर दलित साहित्य का मूल स्वर हैं। 'बस्सा बहुत हो चुका' कविता संग्रह की कविता 'यातना' में ओम प्रकाश वाल्मीकि में शारीरिक यातना को वर्णित करते हुए लिखा है–

'शारीरिक यातना से
बड़ी यंत्रणा होती है
इच्छाओं के विरुद्ध जीना
या देखते–देखते छिनजाना

उन क्षणों का
जिनसे हँसा जा सकता था
हवाओं की तरह'[19]

कुछ विद्वान दलित साहित्य पर अश्लीलता का आरोप लगाते हैं उनका तर्क है कि दलित साहित्य की भाषा गाली गलौज की भाषा है। परंतु यदि ध्यान से अवलोकन किया जाए तो पता चलता है कि इनका जीवन ही ऐसी विषम परिस्थितियों में परिस्थितियों में व्यतीत होता है जहां पर यह सब आना स्वाभाविक है। 'वे जिस परिवेश में जीते हैं, वहां गंदी गलियों में नग्न–धडंग घूमते बच्चे हैं, दूषित वातावरण है, जिसे पारंपरिक आलोचक नहीं जानते, उस परिवेश की भाषा को अश्लील कहना पूर्वग्रह ही कहा जाएगा।

दलित साहित्य की भाषा पर गाली–गलौज की भाषा के आरोप का उत्तर दलित आलोचक कंवल भारती इस प्रकार देते हैं–

'यह बताओ
बलात्कार की शिकार
तुम्हारी मां की भाषा कैसी होगी
गुलामी की जिंदगी जीने वाले
तुम्हारे बाप के विचार
ठाकुर की हवेली में दम तोड़ती
तुम्हारी बहन के शब्द
क्या वे सुंदर होंगे'[20]

अंत में कहा जा सकता है कि दलित साहित्य ऐसे सौंदर्य को प्रस्तुत कर रहा है जो अधिक मानवीय उपयोगी और यथार्थपूर्ण है। दलित साहित्यकारों ने वेदना, विद्रोह और आक्रोश के साथ–साथ मुक्त और परिवर्तन की चेतना को भी रचनात्मक भाषा में उतारा है, दलित साहित्य की प्रतीक भिन्न है, जो यथार्थ की कोख से उपजे है। ये प्रतीक दलित संप्रदाय के दैनिक कार्य से जुड़े हैं। वे कल्पना की रंगीनियों लिए नहीं बल्कि तथ्यों, तार्किक, निष्कर्ष तथा सत्य से पैदा होते हैं।

अध्ययन का उदेदश्य

दलित साहित्य का मूल उद्देश्य उस समाज को जागृत करना और उसे खड़ा होने के लिए प्रेरित करना है, जो आज अशिक्षित और अर्द्धशिक्षित या नवसाक्षर है।

निष्कर्ष

दलित साहित्य का सौंदर्य परंपरागत साहित्य के सौंदर्य से पूर्णरूपेण भिन्न है, दलित साहित्य बौद्धिक विलास यामनोरंजन का साधन नहीं बल्कि सामाजिक परिवर्तन की एक मुहिम है। दलितों को उनकी अस्मिता की पहचान कराने का माध्यम है। दलित साहित्य का मूल उद्देश्य उस समाज को जागृत करना और उसे खड़ा होने के लिए प्रेरित करना है जो आज अशिक्षित और अर्द्धशिक्षित या नवसाक्षर है। इसलिए दलित साहित्य ऐसी भाषा, बिंब, मुहावरों और विचारों का प्रयोग अपने साहित्य में करता है जो क्लिष्टन हो सुग्राहय हो, जिसमें भटकाव या उलझननहो, सरलव स्पष्ट हो। यह साहित्य वंचित, उपेक्षित, शोषित को लेकर चला है वह लोकोपयोगी है। दलित साहित्य समाज और राष्ट्र की एकता, अखंडता औरदृढ़ता के लिए मानव हित की बात करता है। दलित साहित्य में वस्तुगत तथ्यों के उपयोग के बहाने साहित्यकार अपनी रचना के माध्यम से दलितों के अंदर प्रतिरोध की संस्कृति और संघर्ष की चेतना विकसित करना चाहते हैं। दलित कवि के मूल में मनुष्य होता है, तो वह उत्पीड़न और असमानता के प्रति अपना विरोध दर्ज करेगाही। जिसमें आक्रोश आना स्वाभाविक परिणति है। जो दलित कवि की अभिव्यक्ति को यथार्था के निकट ले जाती है। उसके अपने अंतर्विरोध भी हैं, जो कविता में छिपते नहीं है, बल्कि स्वाभाविक रूप से अभिव्यक्त होते हैं। दलित कविता का जो प्रभाव और उसकी उत्पत्ति है जो आज भी जीवन पर लगातार आक्रमण कर रही है। इसलिए कहा जाता है कि दलित कविता मानवीय मूल्यों और मनुष्य की अस्मिता के साथ खड़ी है। दलित कविता निजता से ज्यादा सामाजिकता को महत्व देती है। इसलिए दलित कविता का समूचा संघर्ष सामाजिकता के लिए है। दलित कविता सामाजिक यथार्थ, जीवन संघर्ष और उसकी चेतना की आंच पर तपकर पारंपरिक मान्यताओं के विरुद्ध विद्रोह और लकार के रूप में अभिव्यक्त होता है। यही उसका केंद्रीय भाव भी है जो आक्रोश के रूप में दिखाई देता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *भारतीय दलित आंदोलन का संक्षिप्त इतिहास – मोहनदास नैमिशराय पृ.8–13*
2. *दलित साहित्य का स्वरूप– बजरंग बिहारी तिवारी।*
3. *नया साहित्य का सौंदर्य– पंडित राधाकृष्ण प्रकाशन 2008 पृष्ठ संख्या 189*
4. *रजत रानी 'मीनू' हिंदी दलित कथा साहित्य पृष्ठ संख्या 21*
5. *ओमप्रकाश बाल्मीकि श्जूठनश पृष्ठ संख्या 16*
6. *निशिकांत ठाकुर चंद्रकांत पाटील संपादित मराठी की प्रतिनिधि कविता संख्या 119*
7. *सदियों का संताप– ओमप्रकाश बाल्मीकि पृष्ठ संख्या 13*
8. *सदियों का संताप – ओमप्रकाश बाल्मीकि पृष्ठ संख्या 50– 51*
9. *सदियों का संताप – ओमप्रकाश वाल्मीकि पृष्ठ संख्या 42*
10. *सदियों का संताप – ओमप्रकाश वाल्मीकि पृष्ठ संख्या 17*
11. *अब और नहीं – ओमप्रकाश बाल्मीकि पृष्ठ संख्या 12*
12. *अब और नहीं– ओमप्रकाश बाल्मीकि पृष्ठ संख्या 28*
13. *बस्सा बहुत हो चुका , ओमप्रकाश बाल्मीकि पृष्ठ संख्या 12*
14. *बस्सा बहुत हो चुका, ओमप्रकाश बाल्मीकि पृष्ठ संख्या 89*
15. *बस्सा बहुत हो चुका, ओमप्रकाश बाल्मीकि पृष्ठ संख्या96*
16. *बस्साबहुत हो चुका , ओमप्रकाश बाल्मीकि प्रश्न संख्या 61*
17. *सदियों का संताप, ओमप्रकाश बाल्मीकि प्रश्न संख्या 26–27*
18. *18.रजतरानीश्मीनूश हिंदी दलित कथा साहित्य अवधारणा और विद्ययाएंपृष्ठ संख्या 54*
19. *ओमप्रकाश बाल्मीकि – बस्सा बहुत हो चुका संख्या 34*
20. *कंवलभारती, तुम्हारी निष्ठा क्या होती है पृष्ठ संख्या 53*